

BHOJPURI DANCE & SONGS



DHOBIYA NRITYA, Ghazipur

भोजपुरी नृत्यगान

BHOJPURI DANCE SONGS

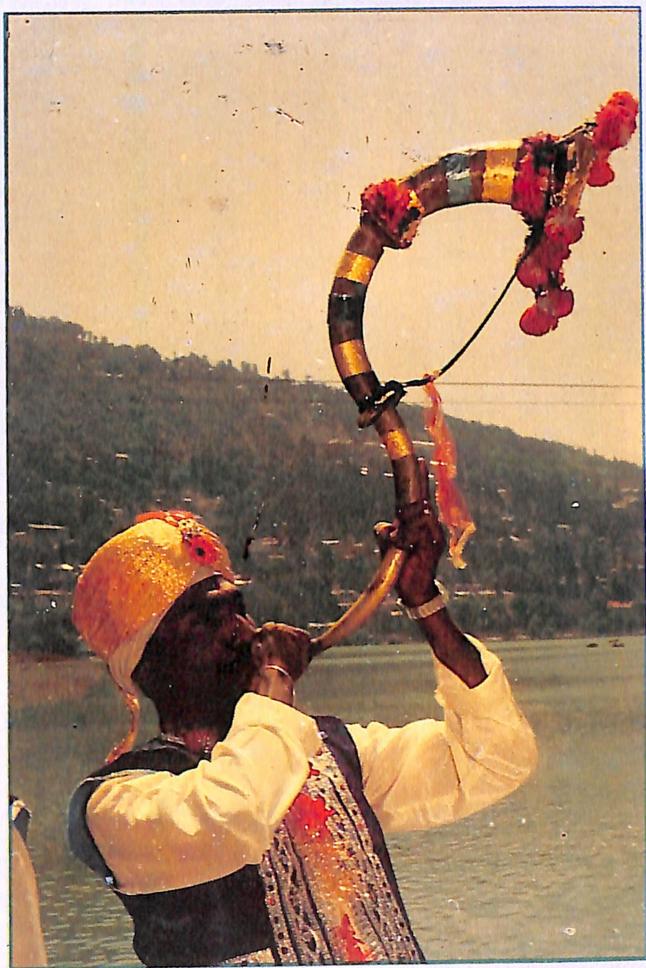
Eastern U.P. and North East Bihar are the areas of Bhojpuri culture. Owing to various historical facts, the influence of Bhojpuri culture can be seen deeply on the inhabitants of Surinam, Mauritius, British Guyana,. Both Bhojpuri literature and culture have a rich and long history. Bhikari Thakur is the popular hero here. His composition "Bidesia" is now presented as a "Loknatya" or folk-drama and is linked with the "Raasak" traditions of Hindi literature.

"Poorbi", "Bilvariya", "Chhapraiya", "Chatgeet", "Laachaari", "Jhoomar", "Bidesia", and "Samskaargeet" constitute the prominent varieties in Bhojpuri folk-songs. Some of these are in praise of Devi, some are linked with festivals, and some are associated with agricultural work. Mirzapur, Azamgarh, Benares and the neighbouring areas are the centres of Bhojpuri dialect.

"Dhobia" dance-songs are very popular here. To the accompaniment of "Lillighodi sawaar geet", they perform many types of gaits and acrobatic steps. During Hori and some festive occasions, they perform a dance known as "London ka naach", or "Nakata" or "Nachaniyan" in the "Swaang style".

Among dancers Sri Devkinandan, and among singers, Smt Sharda Sinha and Baleswar are considered good representatives of Bhojpuri culture, and arts.

Transleted into English : Susheela Misra
Original in Hindi : Urmil Kumar Thapliyal



RANASINGA (Instrument)
Ghazipur.

भोजपुरी नृत्यगान

पूर्वी उत्तर प्रदेश और उत्तर पूर्वी बिहार के क्षेत्र ही, भोजपुरी संस्कृति के क्षेत्र हैं। अनेक ऐतिहासिक कारणों से भोजपुरी का प्रभाव सूरीनाम, मारीशस, ब्रिटिश गयाना आदि देशों के भारतीय मूल के प्रवासियों से भी जुड़ा रहा है। भोजपुरी साहित्य और संस्कृति का इतिहास बड़ा समृद्ध है। भिखारी ठाकुर यहाँ के लोक नायक हैं। उनकी रचना 'बिदेसिया' ने अब एक लोकनाट्य का रूप ले लिया है। 'बिदेसिया' की मूल अवधारणा, हिन्दी साहित्य की रासक-परम्परा से जुड़ती है।

भोजपुरी लोकगीतों में प्रमुख शैलियाँ हैं- पूरबी, बिलवरिया, छपरैय्या, छट गीत, लाचारी, झूमर, बिदेसिया और संस्कार गीत। इनमें कुछ देवी-गीत हैं, कुछ पर्व प्रधान और कुछ कृषि-गीत। मिर्जापुर, आजमगढ़ तथा बनारस के आसपास भोजपुरी बोली का वर्चस्व है।

'धोबिया' नृत्य गीत का यहाँ बड़ा प्रचलन है। इसमें लिल्ली घोड़ी का सवार गीत के साथ अनेक चालें और करतब दिखाता है। होली तथा मांगलिक अवसर पर यहाँ स्वांग की शैली में 'लोन्डो का नाच' भी नाचा जाता है। इसे नकटा और नचनिया भी कहते हैं।

नृत्यकारों में, श्री देवकी नंदन, गीतकारों में श्रीमती शारदा सिन्हा व श्री बालेश्वर, भोजपुरी संस्कृति के प्रतिष्ठित कलाकार हैं।

उर्मिल कुमार थपलियाल

अंग्रेजी अनुवाद : सुशीला मिश्रा
छाया चित्र : राकेश सिन्हा